www.TLHjournal.com Literary Herald ISSN: 2454-3365
An International Refereed/Peer-reviewed English e-Journal
Impact Factor: 6.292 (SJIF)

चर्पटपंजरिकास्तोत्रम्

(पिंजरवत् देह की छंदमय अर्चना)

हिंदी अनुवाद

Dr. Awadhesh Kumar Sinha
Retd. Associate Professor in English
J.M Patel College of Arts
Commerce and Science
(R. T. M. Nagpur University)
BHANDARA-441906, India

प्रात: संध्या दिवस और रात,
शिशिर-वसंत अनुपम सौगात.
समय-रथ-चक्र - घर्घर नाद,
कहीं आह्लाद- कहीं विषाद.
आत्म-विभोर-मन दंभी रोर,
समस्त जग में वैभव का शोर .
प्रिया-परिजन-सर्व-विनश्वर,
नर- नारी -रूप :अर्द्धनारीश्वर .
रति-राग मद जीवन -वसंत,
सुरम्य वितान - परिणय प्रसंग.
जीवन के ये, मोहक आयाम ;
अस्थायित्व-मय, ये दु:ख-धाम.
दस्तक दी सहसा - एक छाया,
अपरिचित देख -जी घबराया.
'बोली वह ! मैं जीवन- सत्य –
क्षणभंगुर दुनिया नहीं अमर्त्य.
समय अति अल्प करो तैयारी,
भज गोविन्द ! जाने की बारी.
त्यागूँ कैसे -कनकाभ-प्रासाद ?
प्रिय-परिजनों से शेष -संवाद.
साथ दुर्दम्य विकारों की बोझ,

बंध-ग्रंथियां देतीं, जन्म कुरोग.

२

उर समक्ष कर, अग्नि- सेवन
पार्श्व-भाग - रवि-रश्मि लेहन
धरा लिपटी,ओढ़े शीत-वितान,
चिबूक-ठेहुना रख, निद्रा-ध्यान.
हस्त-तल श्रेष्ठ, यति -भीक्षा-पात्र;
तरु -सघन तल, आश्रय दिन-रात .
अतृप्त-इच्छाओं का,नर्तन -घर्षण-
देतीं मोहमाल, क्षरित शांति-क्षण
रे मन ! सर्व भूल, भजो घनश्याम :
भव-भय-हारक, दायक दुर्लभ धाम.

३

हे प्यारे ! सदा भज ! कृष्ण ललाम-
जग -परम-आश्रय ! पूरण-सर्व-काम.
मत भूल ! परिजन -इष्ट-मित्र अपार -
करते ये संबंधों का, क्षुद्र - व्यापार.
जब समर्थ-वित्त-अर्जन, तुम थेप्रिय-जन -
पूजित-पुरूष-महिमामय,सर्व गुण-रत्न.
अशक्त क्षीण-काय, जर्जर निरूपाय-
जग-दृष्टि बदली : अब अपूत काय.

४

जटा- जूट सुशोभित-भाल : या मुंचित-केश;
गेरुआ-परिधान -म्लान वदन या शोक की रेख
जग-बीच या जग से बाहर,जल-कण कमल-पत्र पर
जठराग्नि -ज्वाल, भर-मुट्ठी-अन्न के लिये बेहाल.
हे प्यारे ! भजो : गोपाल ! गोपाल ! दीनदयाल. २

५

तनिक भी गीता-ज्ञान, गंगा-जल के बूंदों का पान -

ब्रजबिहारी- हे मुरारि ! कह करता- करूण पुकार :
सुन मृत्युदेव ठमक जाते, करना कार्य-अनिवार,
क्षण- मात्र में श्रीकृष्ण प्रकट हो- हरते दु:ख अपार.
अभय-स्वस्थ मन सदा भजो प्यारे ! गोविन्द बारंबार.२

६

गलित-अंग-पलित-मुंड -दशन-विहीन विवर तुंड;
वार्द्धक्य की भार प्रचंड, ढोते कम्पित हस्त-दंड.
आशा-लता की प्रबल बाढ़, वृद्ध अभी रहा दहाड़.
अनश्वर- असार संसार-पाश,समक्ष देख यमराज-त्रास.
भूल संसार ओ मूढ-मति, सदा जपो मधुराधिपति.२

७

क्रीड़ा-मय बाल- काल, युवक रति- राग निहाल.
बृद्ध शोक-चिन्ता-मग्न, तनिक नहीं ब्रह्म-लग्न.
त्याग धन-संसार--बंध, सदा जपो प्यारे यशोदानंद. २

८

बार- बार मातृ- कुक्षि- निवास, असह्य वेदना पुन: जन्म- त्रास.
मरण- दुसह दु:ख -हाहाकार, पुनर्जनम की व्यथा -कथा-अपार.
त्राहि माम् हे श्रीपति- ज्योति साकार, रे नाथ ! करो भव पार.
भज गोविन्द-गोविन्द ! नर सरल-चित्त ! करो आश ईश,सर्व निमित्त.

९

पुन: दिवस पुनश्च रात, पुन: पक्ष पुनश्च मास.
पुन: अयन पुनश्च वर्ष, तदपि न विगत आशामर्ष.
ममता आशा जीवन-बंध, भज प्यारे केवल गोकुलानंद.
भज-भज प्यारे राधा-श्याम! सद्गति दायक श्रीघनश्याम.

१०

गत-आयु -नहीं काम-शैलाब, वारि विहीन -कैसा तालाब ?

बिना वित्त -कैसा परिवार, सत्य-दर्शन फिर क्या संसार ?
जीवन के ये मंत्र अमोल - शोधि-शोधि राखिये मुरारि बोल.
सदा जपिये जय गोकुलनाथ, करते अनाथों को सदा सनाथ.

११

वक्ष-उरोज नाभि चारू चितवन, मांस-वसादि विकार भवन.
वाह्य चर्म सुघर मनोहर रूप, रक्त-मल-मूत्रादि-तन--बदरूप
प्रति- पल कीजिये सोच- विचार, सतत भजिये नंदकुमार .
माया - मोह के संहारक नाथ, बार- बार कहिये -यदुनाथ.२

१२

आये कहाँ से इस जगत में, क्या तेरी- मेरी पहचान ?
तात-मात हैं कौन हमारे -क्या जग का अनुपम-अवदान?
संसार है -यह छल-छद्म असार, यह सत्य जीवन का सार.
जपिये पल-पल गोविंद नाम, परम आश्रय श्रीकृष्ण ललाम.२

१३

गाइये गीता-नाम-सहस्त्र-बार,ध्यान में रखिये सदा नंदकुमार.
सुधी-संत-संग सदा श्रेयस्कर, दरिद्र- तोषन-पोषन अघहर.
श्रीगोविन्द सम इन्हें पेखते सुजान, करते सदा इनका सम्मान.
गोविन्द - गोविन्द गोविन्द का ध्यान, है महामंत्र - मुक्तिगान.२

१४

प्राण- वायु जबतक शरीर में, स्नेह कुशल-क्षेम पृच्छक गेह में.
विगत प्राण- वायु शव भयंकर, नही प्रिया लगाती अंक भर.
यह जीवन का शाश्वत सत्य, प्रति पल गोविन्द भजो हे मर्त्य !
पल-पल गोविन्द भजो हे मर्त्य ! केवल गोविन्द भजो हे मर्त्य ! २

१५

काम-क्रीड़ा रति -समागम, आरंभिक सुख बाद में दु:ख -आगम.
मृत्यु पथ पर नर सदा आसीन, तदपि क्यों पापाचार में लीन.
संसार नश्वरता का परम आगार, नही स्थायित्व नहीं आधार.
हर पल जपिये करूणानिधान, सर्व सशक्त -सबसे बलवान .

१६

चिथड़ों से विरचित-कन्था-माल, डाल गले में यति- निहाल.
जान पुण्यापुण्य का परम रहस्य, नहीं मैं- नहीं तू है सत्य.
परम प्रकाश सर्व समाहित, सोऽहम समष्टि भेद अनुचित.
लब्ध परम तत्त्व -फिर कैसा शोक,भज गोविन्द बनो विशोक.

१७

होता अफलित गंगा- सागर-स्नान, व्रत का पालन अथवा दान;
जब तक गोविन्द का नहीं आदेश, व्यर्थ कोटि दान- तप-कलेश.
साज्ञा सफल होता सर्व कर्म, स्मरण : गोविन्द, मनुज का धर्म;
सतत भजन गोविन्द का नाम, कुंठा- मुक्त विगत संचित काम.